



अभ्यास पत्रक

पाठ: 5 - कबीर के दोहे

नाम :- कक्षा :- अवधि :- अनुक्रमांक :- प्राप्तांक :-

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) हमें कैसी वाणी बोलनी चाहिए?

(क) जो केवल हमें अच्छी लगे

(ख) जो दूसरों को शीतल करे और स्वयं को भी शीतल करे

(ग) जो बहुत जोर से बोली जाए

(घ) जो मीठी न हो

(ii) कबीर किसे अपने आँगन में कुटी बनाकर पास रखने की सलाह देते हैं?

(क) साधु को

(ख) मित्र को

(ग) निंदक (आलोचक) को

(घ) गोविंद को

(iii) साधु का स्वभाव किसके जैसा होना चाहिए?

(क) खजूर के पेड़ जैसा

(ख) पंछी जैसा

(ग) सूप जैसा

(घ) पानी जैसा

(iv) "कबिरा मन पंछी भया" - इस पंक्ति में मन की तुलना किससे की गई है?

(क) सूप से

(ख) पंछी से

(ग) साबुन से

(घ) गुरु से

(v) व्यक्ति को कैसा फल प्राप्त होता है?

(क) जैसी वह पूजा करता है

(ख) जैसी वह संगति करता है

(ग) जैसा वह भोजन करता है

(घ) जैसा वह सोचता है

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) मधुर वाणी बोलने से पहले मन का क्या खो देना चाहिए?

उत्तर-

(ii) निंदक बिना पानी और साबुन के किसे निर्मल (साफ) कर देता है?

उत्तर-

(iii) सूप का क्या स्वभाव होता है?

उत्तर-

(iv) मन पंछी बनकर कहाँ चला जाता है?

उत्तर-

(v) "थोथा देड़ उड़ाय" का क्या अर्थ है?

उत्तर-





3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें (3 x 2 = 6 अंक)

(i) निंदक को पास रखने से क्या लाभ होता है?

उत्तर-

(ii) साधु और सूप के स्वभाव की समानता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(iii) "जो जैसी संगति करे, सो तैसा फल पाय" - इस पंक्ति का आशय उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर-

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें (4 अंक)

(i) "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥" - इस दोहे का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। 'मन का आपा खोय' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर-



उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 2)



1. बहुविकल्पीय प्रश्न:

- (i) (ख) जो दूसरों को शीतल करे और स्वयं को भी शीतल करे
- (ii) (ग) निंदक (आलोचक) को
- (iii) (ग) सूप जैसा
- (iv) (ख) पंछी से
- (v) (ख) जैसी वह संगति करता है

2. एक वाक्य में उत्तर:

- (i) मधुर वाणी बोलने से पहले मन का आपा (अहंकार) खो देना चाहिए।
- (ii) निंदक बिना पानी और साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है।
- (iii) सूप का स्वभाव सार-सार (अच्छी चीजों) को ग्रहण करने और थोथा (व्यर्थ चीजों) को उड़ा देने का होता है।
- (iv) मन पंछी बनकर जहाँ चाहता है, वहाँ चला जाता है।
- (v) "थोथा देइ उड़ाय" का अर्थ है - व्यर्थ या सारहीन चीजों को उड़ा देना या त्याग देना।

3. संक्षिप्त उत्तर:

- (i) निंदक या हमारी आलोचना करने वाले व्यक्ति को पास रखने से यह लाभ होता है कि वह हमें हमारी कमियों और गलतियों से अवगत कराता रहता है, जिससे हमें बिना किसी खर्च (पानी-साबुन) के अपने स्वभाव को सुधारने और निर्मल बनाने का अवसर मिलता है।
- (ii) साधु और सूप के स्वभाव में यह समानता है कि जिस प्रकार सूप अनाज में से सार-तत्त्व (अनाज) को रख लेता है और व्यर्थ की भूसी (थोथा) को उड़ा देता है, उसी प्रकार एक विवेकशील साधु को भी संसार से केवल ज्ञान और अच्छाई जैसी सार की बातें ग्रहण करनी चाहिए और व्यर्थ की बातों को त्याग देना चाहिए।
- (iii) इस पंक्ति का आशय है कि मनुष्य पर उसकी संगति का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। वह जैसे लोगों के साथ रहता है, उसका आचरण और परिणाम भी वैसा ही हो जाता है। उदाहरण के लिए, अच्छे और विद्वान मित्रों के साथ रहने पर व्यक्ति अच्छी आदतें सीखता है, जबकि बुरे मित्रों की संगति में वह बुरी आदतों का शिकार हो जाता है।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) इस दोहे का भावार्थ है कि हमें ऐसी मधुर और विनम्र वाणी बोलनी चाहिए जो सुनने वाले के मन को भी शांति और शीतलता प्रदान करे और साथ ही हमारे स्वयं के मन को भी शांत और शीतल रखे। 'मन का आपा खोय' से कवि का तात्पर्य है 'मन के अहंकार को त्याग कर'। कबीर कहते हैं कि जब हम अपने अंदर से 'मैं' का भाव या घमंड मिटाकर बात करते हैं, तभी हमारी वाणी में सच्ची मिठास और विनम्रता आती है। जब वाणी में अहंकार नहीं होता, तो वह सुनने वाले को प्रिय लगती है और किसी भी प्रकार के विवाद या कटुता को जन्म नहीं देती, जिससे सामने वाले का मन शांत होता है। जब सामने वाला शांति से हमारी बात सुनता है, तो बदले में हमें भी शांति और संतोष का ही अनुभव होता है।

